चिंता, विश्व-प्रिया, एकायन

अज्ञेय काव्य विवेचन (खण्ड-3)

डॉ. सुरेश चंद्र पाण्डेय

‘चिंता’, ‘विश्व-प्रिया’, ‘एकायन’

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-3)

डॉ. सुरेश चन्द्र पाण्डेय

अव. प्राप्त रीडर-अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डी.ए.वी.पी.जी कॉलेज

आजमगढ़ (उ.प्र.)

विषय-क्रम

‘चिंता’ 3

काव्य का स्वरूप; रचना काल; पृष्ठ-भूमि; वर्ण्य विषय; विश्व-प्रिया कौन?; छाया-प्रसंग; निष्कर्ष; ‘चिंता’ में ‘छाया’ के प्रयोग; ‘छाया’ के कुछ और; प्रयोग-काव्य में, गद्य में; विवेचन एवं निष्कर्ष; वस्तु-भाव विवेचन

‘विश्व प्रिया’ 25

प्रेम की परिभाषा; प्रेम की व्याख्या; अस्तित्व-बोध पर बल; प्रेम का एक नया अर्थ; जीवन की भंगुरता का बोध; प्रेम कब/कैसे महान बनता है?; प्रेम मुक्ति का सोपान है; मुक्ति का आस्वाद क्या है?; नया जीवन-बोध विश्व-भाव है; प्रेमी का आदर्श/कवि का आदर्श; प्रेम का शिखर बिंदु: व्यक्ति और समिष्ट का एकीकरण: विराट दृष्टि

‘एकायन’ 33

प्रेम से संदर्भित कुछ प्रमुख भाव-सूत्र; नारी की शक्ति एवं महिमा; प्रेयसी का आदर्श; प्रेम और नारी की चिरंतनता; शाश्वत समर्पण-समर्पण की पुकार, प्रेम शब्दातीत है, प्रेम का प्रभाव,; प्रेम में देना ही पाना है, आदर्श प्रणय, जोखिम का खेल, ; पीड़ा-बोध और विरह की मिठास, प्रेम में गान भी इसलिए मीठा होता है

अभिव्यक्ति –विधान: 41

छायावाद से प्रभावित पद-योजना; पूर्ववर्ती रचनाकारों की प्रेरणा; अज्ञेय और मैथिलीशरण गुप्त; अज्ञेय और महादेवी; यात्रा का रूपक; बिम्ब-विधान; दीपक के बिम्ब (विश्व प्रिया; एकायन); प्रकाश के बिम्ब; अंधकार के बिम्ब; कुछ और बिम्ब/विशिष्ट प्रयोग; तद्भव-प्रयोग; महत्व: (‘चिंता’); पशु-पक्षियों के नाम (‘भग्नदूत’ और ‘चिंता’); वृक्ष-वनस्पतियाँ

'चिन्ता'

अज्ञेय का प्रथम प्रकाशित काव्य-संग्रह 'भग्नदूत' (प्रकाशन काल : 1935) है और 'चिन्ता' का प्रकाशन काल 1942 है। 'सदानीरा-1' में अज्ञेय की कविताओं की प्रस्तुति में 'चिन्ता' को पहले रखा गया है। यहाँ अज्ञेय-काव्य का विवेचन प्रकाशन-क्रम से (जो सदानीरा में दिया गया है) प्रस्तुत किया जा रहा है।

काव्य का स्वरूप :

'चिन्ता' फुटकर कविताओं का संग्रह न होकर एक ऐसी श्रृंखला थी जिसमें एक कथा भी निहित थी-जिसे इसलिए लगभग खंड काव्य माना जा सकता है। बल्कि इस पुस्तक में भी दो श्रृंखलाएँ थीं-अर्थात् दो खंडकाव्य थे। पूरी पुस्तक 'चिन्ता' नाम से प्रकाशित हुई थी और इसके दो भाग क्रमश: 'विश्व प्रिया' और 'एकायन' थे।[1]

रचना-काल : 'विश्व प्रिया' की कविताओं का रचना काल प्राय: सन् 1932-36 तथा 'एकायन' का रचना-काल सन् 1934-36 है।[2]

पृष्ठभूमि : अज्ञेय के बन्दी और क्रांतिकारी जीवन की अवधि सन् 1929 से '36 तक है। सन् 1931 से सन् '34 के मध्य तक अज्ञेय दिल्ली जेल में बन्दी रहे। इसके बाद लाहौर और डलहौजी में घर में नजरबन्द रहे। इस अवधि में उन्होंने छायावाद, मनोविज्ञान, राजनीति, अर्थशास्त्र और कानून का गहन अध्ययन किया। 'यह अवधि घोर आत्म-मंथन, शारीरिक यातना, स्वप्न-भंग की पीड़ा की अवधि रही'। इस अवधि में, दिल्ली जेल में 'चिन्ता', 'विपथगा' की अनेक कहानियों तथा 'शेखर' की रचना हुई।[3]

---

1 सदानीरा-1 भूमिका पृष्ठ, 8

2 'चिन्ता' : पहले संस्करण की भूमिका, पृष्ठ, 9

3 विद्या निवास मिश्र : अज्ञेय, पृष्ठ, 9-10

आत्म-मंथन की इस अवधि में क्रान्ति की सफलता-बिफलता, आदर्शों की सार्थकता, जीवन की ही सार्थकता आदि अनेक प्रश्न अज्ञेय जैसे संवेदन शील व्यक्ति के को मथते रहे होंगे। 'शेखर : एक जीवनी' प्रथम भाग का आरंभिक अंश, इस संदर्भ में उल्लेख योग्य है-'फाँसी !

जिस जीवनको उत्पन्न करने में हमारे संसार की सारी शक्तियाँ, हमारे विकास, हमारे विज्ञान, हमारी सभ्यता द्वारा निर्मित सारी क्षमताएँ या औज़ार असमर्थ हैं, उसी जीवन को छीन लेने में, उसी का विनाश करने में, ऐसी भोली हृदयहीनता-फाँसी !'

'चिन्ता' की रचना की पृष्ठभूमि में अज्ञेय के पहला प्यार की भूमिका का उल्लेख आवश्यक है। डॉ. राम कमल रायके अनुसार-सन् 1922 में, अज्ञेय के पिता पं. हीरानंद शास्त्री का स्थानांतरण दक्षिण में हो गया-नीलगिरि प्रदेश में कोटागिरि, ऊटी आदि स्थानों पर।[4] अज्ञेय ने सन् 1927 में मद्रास से इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की। दक्षिण-प्रवास में ही एक दक्षिण भारतीय लड़की से उनका प्रेम-संबंध स्थापित हो गया था। उस लड़की के समुद्र में डूब कर मर जाने के कारण वह पहला प्यार काल की भेंट चढ़ गया। डॉ. राम कमल राय के अनुसार- 'शेखर' में शारदा नाम की लड़की उस दक्षिण भारतीय लड़की की प्रतिनिधि है।[5]

'चिन्ता' की रचना जिस मानसिक अवस्था में हुई होगी, उसके निर्माण में उपर्युक्त घटना के प्रभाव से इनकार नहीं कया जा सकता है। पं. विद्या निवास मिश्र के अनुसार- 'चिन्ता' की छाया वह दक्षिण भारतीय लड़की है जिसकी स्मृति में अज्ञेय ने 'द्वितीया' शीर्षक कविता (इत्यलम् संग्रह में शामिल-रचना काल सन् 1937) लिखी।[6] सन् 1929 से 36 तक अज्ञेय के जीवन पर अमिट छापों की समीक्षा करते हुए पं. विद्या निवास मिश्र ने लिखा है-

---

4 शिखर से सागर तक, पृष्ठ, 26

5 वही, पृष्ठ, 30

6 परिशिष्ट-1

'सात साल के इस अर्से ने कई छापें छोड़ी हैं। xx सबसे अधिक महत्वपूर्ण छाप इस जीवन की उनकी रागात्मक अनुभूति को सघन बनाने में है। इस जीवन में प्रखर शक्ति और ताप जिस स्रोत से मिला था, उस बाल-संगिनी के आकस्मिक निधन की चोट बड़ी गहरी पड़ी। वह वियोग उन्हीं के शब्दों में 'स्थायी वियोग' था। उस 'अत्यन्तगता' की स्मृति एक अमूल्य थाती थी। इसी के सहारे हारिल का धर्म निभाना ही सबसे बड़ा पार्थिव धर्म उन्होंने जाना है। यह उन्होंने जाना और अपनी 'माँग को स्वयं अपना खंडन 'माना।' 'आहुति बनकर' ही उन्होंने प्रेम को 'यज्ञ की ज्वाला' के रूप में देखा।'[7]

उपर्युक्त विवरणों के आधार पर यह कहना कि 'चिन्ता' की कविताओं पर 'स्थायी वियोग' की छाप पड़ी होगी, गलत नहीं है। संक्षेप में यही 'चिन्ता' की पृष्ठभूमि है।

वर्ण्य विषय :

'चिन्ता' में चिरन्तन पुरुष और चिरन्तन स्त्री के गतिशील संबंधों का चित्रा किया गया है। अज्ञेय के ही शब्दों में 'नाटकीय भाषा में हम इसे पुरुष और स्त्री का चिरन्तन संघर्ष कह सकते हैं। पुस्तक के दो खण्डों में क्रमश: पुरुष और स्त्री के दृष्टिकोण से मानवीय प्रेम के उद्‌भव, उत्थान, विकास, अन्तर्द्वन्द्व, हास, अन्तर्मन, और चरम संतुलन की कहानी कहने का यत्न किया गया है। कहानी वर्ण्य-विषय की भाँति ही अनगढ़ है और जैसे प्रेम जीवन के प्रतीक गद्य-पद्यमय होते हैं वैसे ही यह कहानी भी गद्य-पद्यमय है। दोनों खण्डों के नामों में संकेत रूप से पुरुष और स्त्री के दृष्टिकोण का निर्देश है।'[8]

प्रेम जीवन के प्रसंग :

कवि के दावे के अनुसार 'चिन्ता' में टेक्‌नीक का कोई प्रयोग नहीं है, 'मानव के प्रेम और मानव के

---

7 अज्ञेय काव्य –स्तबक, पृष्ठ, 22

8 'चिन्ता' : भूमिका, पृष्ठ,7,8